

शंकर गुहा नियोगी ला भइया
करथों मेंहा लाल सलाम

फागूराम यादव

शहीद शंकर गुहा नियोगी यादगार समिति
लोक साहित्य परिषद

प्रकाशन काल : १४ फरवरी, १९९२

सहयोग राशि : २ रुपये

प्रकाशक : लोक साहित्य परिषद
द्वारा-छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा
सी. एम. एस. एस. आफिस,
दल्ली राजहरा, दुर्ग
मध्य प्रदेश पिन- ४९१-२२८

मुद्रक : बजाज प्रिन्टर्स
बेन रोड, दल्ली राजहरा

शंकर गुहा नियोगी के जीवन-संघर्ष
पर
फागुराम यादव की छत्तीसगढ़ी
आल्हा गीत

सुमिरन करके शहीद मनके,
 ले अनुसुईया दाई के नाम,
 जगदीश भइया तोला मै सुमिरौ,
 सुमिरौ लइका सुदामा के नाम,
 टीभूराम अऊ सोनऊदास गा,
 भइया समारू अऊ जैलाल,
 डेहरलाल अऊ हेमनाथ गा,
 पुनऊराम अऊ रामदयाल ।

तुंहर लहु भुइयां मा टपके हे,
 धरती रंगे हे लाले लाल,
 छत्तीसगढ़ के आवो वहादूर,
 प्राण के देए हावो वलिदान,
 तुंहर नाम के लगे पताका,
 लाल-हरा हावे निशान,
 दुरिहा-दुरिहा ले बगरे हावे,
 छत्तीसगढ़ में हावे महान,
 तेकर नीचे मेहनतकाश हे,
 साथी मजदूर भइया किसान,
 कंधा से कंधा मिलाके चलथे,
 ये एकता के हावे परमान ।

ये एकता हा कइसे बनिस गा,
 तेकर साथी सुनो वधान,
 ये भारत मा मोर संगवारी,
 जनमीस गा एक पुरुष महान,

नाम नियोगी गा मोर भइया,
जेला संगी जाने जहान,
करे नौकरी भिलाई प्लांट में,
लोहा पथरा दिये गलाय,
बारह घंटा मेहनत करके,
थप-थप अंग पसीना बोहाय,
काम करत सब साथी थक जाय,
मिलय ना भाई थोरको आराम,
मन में भइया नियोगी सोचे,
किया जाय अब कोई उपाय,
तब साथी मन में एकता बनावे,
सब साथी ला दे समझाय,
आठ घंटा के डिप्टी चाहिए,
कुछ मिले आराम के नियम बनाय,
मजदूर सब ज्ञान सहमत हो गए,
एक होके सब हल्ला मचाय,
भीतर-भीतर बनगे संगठन,
मजदूर एकता के गठरी बंधाय,
तब कान खड़े होंगे अफसर के,
जीव हर गा ओकर झल्लाय,
नवसलवादी के संज्ञा देवे,
बी. एस. पी. नौकरी ले दिये निकाल,
इहां के बात ला इहां रहन दे,
अऊ आघु के मुनो हवाल ।

नियोगी गिंदरे छत्तीसगढ़ में,
 का बस्तर के डोंगरी पहाड़.
 कभू चरावे छेरी पटरू,
 बनवासी सन करे शिकार,
 मछरी मारे के धंधा करे हे,
 बनियाइन चड्डी के व्यापार,
 खूब खने हे खेत में गोदी,
 मुड़ में झऊहा माटी डार,
 मजदूर मन सन काम करे जी,
 अऊ संगठन करे तैयार.
 दानीटोला में पथरा फोरे,
 सब्बल घरके खोदे खदान,
 मजदूर जिनगी जिये हे संगी
 मेहनतकश के बनगे मितान,
 गिंदर-गिंदर छत्तीसगढ़ देखे,
 खुब होवत है अत्याचार,
 जहां-जहां आवे बन संगठन,
 इन्कलाब के करे आवाज,
 इहां के बात ला इहां रहन दे,
 अऊ आधु के सुनो हवाल ।

छत्तीसगढ़ के दुसरा जिला में,
 दल्ली मा हावे लीहा खदान,
 जिहां मजदूर काम करेगा,
 महिला-पुरुष मिल दस हजार,

सोलह घंटा काम करे जी,
 तभी न मिले पेट भर भात,
 ठेकेदारी-अत्याचारी,
 चलत रही स शासन के राज,
 लइका वाप ला देखे नहीं गा,
 रात के जाय अऊ रात के आय,
 दलाल यूनियन झोली भरेगा,
 मजदूर मन ला उल्लू बनाय,
 अइसे दिन हा गुजरे संगी,
 सन ७७ के दिन जब आय,
 लाल-तिरंगा यूनियन मिलके,
 बोनस के गा नियम बनाय,
 डिपाटमेंटल ला ३७० रूपया,
 ठेका मजदूर बर ७० रही जाय,
 तब मजदूर हा सोच में परगे,
 मिलके संगी करीन विचार,
 हमू कमायत लोहा पहाड़ में,
 तब बोनस कइसे फस्क हे यार,
 मुखिया मन जाके नेता ला पुछीन,
 तब नेता मनके मिलिस जवाब,
 होवय उन्हत्तर न एकहत्तर,
 एग्रीमेंट नइ कटे जनाव,
 पांच पांच जब हाथी के होही,
 उही दिन मोर कटही बात,

हम नेता हैं हमर कलम हे,
 साइन करे हे हमरे हाथ,
 अइसे नेता मन जब बोलिन,
 तब मजदूर मन सब होंगे नाराज,
 कांट के रहिबो तुंहर बात ला,
 कश्न लगीन सब एक आवाज,
 कूदगे सब हड़ताल में मजदूर,
 लाल-भांठा के मैदान,
 महीनों भर ले चलन लगीस जी,
 बन्द रीहीस सब लोहा खदान,
 बिन नेता के हड़ताल हा होंगे,
 अफसर से कोन करही बात,
 अनपढ़ सब मजदूर हावन,
 नवा नेता के करो तलाश ।

एक जन नेता हावे रे संगी,
 दानीटोला में खनथे खदान,
 अधिकार के बात बताथे भइया,
 शंकर गुहा नियोगी नाम,
 खुद ओहर गा मेहनत करथे,
 अऊ जन-हित के करथे काम,
 गुहा नियोगी ला बुला के लानीन,
 आघु में रख दीन जम्मो बात,
 कइसे करबो तीही बताना,
 नेता बनाथन तोला आज ।

तब भइया नियोगी बोलन लगीस गा,
 सब मजदूर हो जावो एके साथ,
 एकता में बड़े-बड़े बात हा बनये,
 एकता के ताकत हावे महान,
 दुनिया में अइसन ताकत नइहे,
 जो तोड़ सके एकता के तान ।

फेर ७० रूपया ला ठोकर मारके,
 बोनस ले लीन रूपया पचास,
 एग्रीमेंट दलाल के काटीन,
 बापी मनके रहिगे हाथ,
 विजय जूलूस मजदूर के निकालिस,
 पहिली लड़ाई में होगे पास,
 हाथी के पांच ठन पाँव बनाके,
 जूलूस में लेगीन एके साथ,
 अइसन एकता वनीस रे संगी,
 बेला गुहा नियोगी पाठ पढ़ाय,
 लाल-हरा झण्डा के भइया,
 नवा यूनियन दिये बनाय ।

फेर अधिकार के बात चलिस गा,
 घर मरम्मत के दिन आय,
 सौ रूपया गा बाँस बल्ली बर,
 ठेकेदार ला पकड़े जाय,
 लड़के लड़ाई ठेकेदार से,
 एग्रीमेंट अब दिये कराय,

एग्जीमेन्ट तो होंगे भइया,
 पर पइसा देए बर ठेंगवा देखाय,
 फेर मजदूर मन लड़ीन लड़ाई,
 ६२ दिन हड़ताल में जाय,
 पूंजीपति अऊ शासन मिलके,
 मजदूर ऊपर गोली चलाय,
 आन्दोलन ला कुचले के खातिर,
 ११ ज्ञान ला शहीद बनाय,
 गुहा नियोगी ला जेल में लेगे,
 मजदूर नेता ला बन्दी बनाय,
 १४४ घारा लगाके,
 मजदूर मन ला खूब डरवाय,
 १४४ घारा ला टोरीन,
 खूब पुलिस के डण्डा खाय,
 फिर भी मजदूर लड़त रीहीन गा,
 गुहा नियोगी ला लिये छुड़ाय,
 जेल से छुटके आगे नियोगी,
 मजदूर मन से फेर मिल जाय,
 दिनहे कुरबानी मजदूर मन ह्या,
 तब अधिकार ला सब ज्ञान पाय
 एक से एक फेर लड़ीन लड़ाई,
 हर मंजिल में सफलता पाय ।

शोषित पीड़ित जनता मनहा,
 ये संगठन ला मन से भाय,

नांदगांव कपड़ा मिल मजदूर,
दऊड़ के भइया दल्ली आय,
अपन हाथ में गा मोर भइया,
लाल-हरा झण्डा ला उठाय,
फिर लड़ीन लड़ाई उहां के मजदूर,
अपन छाती ला दिए अड़ाय,
अधिकाश के बात करीन संगवारी,
भले पुलिस के डण्डा खाय,
मजदूर के जब एकता देखीन,
उंहचो शासन गोली चलाय,
चार इन साथी ला शहीद बनाइन,
गुहा नियोगी ला जेल भंजवाय,
तभो मजदूर लड़त रीहीन गा,
नेता ला अपन लिये छुड़ाय,
अइसन ताकत एकता में होथे,
जेहा अपन अधिकार ला पाय,
उंहचो विजय होइस मजदूर के,
ये सब एकता के ताकत आय,
लड़ना हे डरना काबर,
ये सब सीख नियोगी आय ।

बाराद्वार अऊ हिरीं माइन्स गा,
चांदी डोंगरी में पहुँचे जाय,
लाल-हरा झण्डा हा भइया,
जगा-जगा में गा लहाय,

वगरगे संगी सबो जगा में,
 पूरा छत्तीसगढ़ में छाया,
 लाल रंग हे मजदूर मन के,
 अऊ हरिहर रंग हा किसान के आय,
 दोनों ताकत एक में मिलके,
 अग्नि कस गोला बन जाय,
 अइसे बनाइस एकता नियोगी,
 छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा कहाय,
 संघर्ष के खातिर करे निर्माण ला,
 निर्माण के खातिर युद्ध उठाय,
 शिक्षा के खातिर ११ स्कूल,
 मजदूर मन दिल्ली मा बनाय,
 ओ स्कूल में लइका मन हा,
 पढ़के भइया शिक्षा पाय,
 राग से मुक्ति पाये के खातिर,
 शहीद अस्पताल नाम कहलाय
 शहीद के नाम से बने हे गैरेज,
 नौजवान मन ट्रेनिंग पाय,
 अइसन सीख ला देहे नियोगी,
 एकता में सब कुछ बन जाय ।

सबो लड़ाई लड़ीस मजदूर,
 राजनीति में पहुँचे जाय,
 विधानसभा के चुनाव जीत के
 नगर भोपाल के सीट में जाय,

टुक भरइया माइन्स के मजदूर,
ठाकुर जनकलाल कहलाय ।

अइसन ताकत हे मजदूर में
जेहा सारी दुनिया बनाय,
वीर नारायण के इतिहास ला,
गुहा नियोगी खोज के लाय,
अइसन वीर के नाम ला भइया,
चोट्टा मन हा रिहीस लुकाय.
ओला आघु में लानिस नियोगी,
वीर नारायण दिवस मनाय,
ओकर नाम ला करिस उजागर,
छत्तीसगढ़ के बहादूर आय.
लड़े रिहीस गा खूब लड़ाई,
सोनाखान बासी कहलाय,
ओकरे रस्ता में चलके नियोगी,
सब ज्ञान ला गा सग रेंगाय ।

एकता ला देखिन भिलाई के मजदूर,
मन में संगी करीन विचार,
इही संगठन में मिल जातेन,
तब जाके हमर होही उद्धार,
लाल-हरा झण्डा ला संगी,
हाथ में अपन लिये उठाय,
फैक्ट्री के मजदूर एक संग होंगे,
एके होके संगठन बनाय,

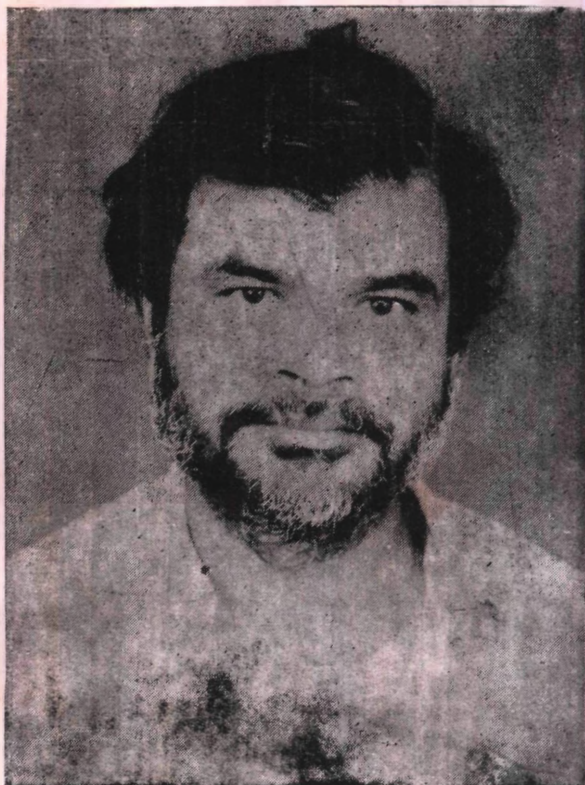
इन्कलाव के होवे आवाज हा,
 भिलाई नगर में गूँजे जाय,
 सही मांग जब मजदूर राखिस,
 मालिक मन के जी कतराय,
 यूनियन-फूनियन कुछ नइ जानन,
 कहिके मालिक आंख देखाय,
 मजदूर ऊपर करे कड़ाई,
 छटनी के नीति अपनाय,
 छटनी करन लगीस मजदूर ला,
 मुखिया ऊपर केस चलाय,
 बाहर के गा गुण्डा बलाके,
 मार-पीट मजदूर में कराय,
 गुण्डा-गर्दी चाकू बाजी,
 ये सब आम बात बन जाय,
 दलाल यूनियन करे दलाली,
 गांव के मनखे ला ठग-ठग लाय,
 तुंहला नौकरी मिलही भिलाई में,
 बेरोजगार ला लालच देखाय,
 गांव के मजदूर भिलाई में आगे,
 अऊ जुलूस में लाइन लगाय,
 काम चाहिये काम चाहिये,
 अड़बड़ संगी शोर मचाय,
 नवां मजदूर ला फैक्ट्री में लेगे,
 गड़वड़-सड़बड़ काम कराय,

कई मजदूर के जान गंवाय,
 ऊपर से नीचे गिर जाय,
 काम करे के ढंग नइ जाने,
 वो मजदूर तो नेवरिया आय,
 जुन्ना मजदूर बर काम हा नइये,
 ओ सब भूख-भूख रहि जाय,
 तभो ले मजदूर लड़न लगिस गा,
 लड़त-लड़त बरसों बीत जाय,
 कई संगठन करे समर्थन,
 मजदूर बर राहत पहुँचाय,
 लइका मन बर कापी पुस्तक,
 शिक्षा कोष समिति बनाय,
 वकील जज अऊ बुद्धिजीवी मन,
 कोष समिति सदस्य बन जाय,
 अइसे एकता बनीस संगवारीं,
 गुहा नियोगी के बुद्धि आय ।

शंकर गुहा नियोगी ऊपर,
 कई ठन शासन केस बनाय,
 दू महीना ले जेल में राखीन
 अऊ जिला बदर के निबम बनाय,
 येकर विरोध करीन जनता मन,
 तब जिला बदर घलो रूक जाय,
 छत्तीसगढ़ के मजदूर मन सन,
 गुहा नियोगी दिल्ली जाय,

कइसे शोषण होवत हावे,
 राष्ट्रपति ला जाके बताय,
 सबो पार्टी के नेता मन ला,
 छत्तीसगढ़ के बात बताय,
 नइहे सुरक्षा थोरको उहां,
 कभू कहीं कोन्हो मर जाय,
 दिल्ली भोपाल सबो जगह में,
 गुहा नियोगी खूबर करि आय ।

पूंजीपति अऊ ज्ञासन मिलके,
 खतरनाक एक साजिश बनाय,
 २८ सितम्बर गुण्डा लगाके,
 गुहा नियोगी ला दे मरवाय,
 शहीद होगे गुहा नियोगी,
 देश भर सब शोक मनाय,
 मेहनतकश के रिहिस मसीहा,
 सदा-सदा अमर होई जाय,
 धन्य-धन्य हे ओ माता ला,
 जेहा अइसन लाल उपजाय,
 धन्य-धन्य हे ओकर पिता ला,
 जेहर अइसन पुत्र ला बाय,
 धन्य-धन्य ओ महापुरुष ला,
 मेहनतकश ला रस्ता बताय,
 ओकर बन्नाये रस्ता हा भइया,
 मेहनतकश बर हे बरदान,
 शंकर गुहा नियोगी ला भइया,
 करथों मेंहा लाल सलाम ।



जन्म : १४ फरवरी, १९४३

शहादत : २८ सितम्बर, १९९१